# अध्याय दो

## इतिहास

### प्राचीन इतिहास

**आख्यान और किंवदन्तियां :**

लौकिक परम्परा के अनुसार सीतापुर का नाम राम की पत्नी, सीता के नाम पर पड़ा है। कहा जाता है कि वे एक तीर्थ-यात्रा के दौरान राम के साथ इस स्थान में थोड़े समय के लिये ठहरी थीं। अकबर के शासन काल में इस नगर का नाम छत्यापुर[1] या छितियापुर[2] था, जो सीतापुर का एक अपभ्रंश रहा होगा अथवा संभव है सीता से इसका कोई संबंध न रहा हो।

कहा जाता है कि उत्तर भारत के दो प्राचीन साम्राज्यों, जिनमें से एक हस्तिनापुर के चन्द्र वंश का और दूसरा अयोध्या के सूर्य वंश का था, की सीमाएं इस जिले में मिल गई थीं। एक कथा के अनुसार, हरगांव (तहसील सीतापुर में) की संस्थापना अयोध्या के प्रसिद्ध राजा हरिश्चन्द्र ने की थी, किन्तु दूसरे आख्यान के अनुसार यह राजा विराट की राजधानी थी, जहां पांडवों ने अपने निर्वासन का कुछ समय व्यतीत किया था। यद्यपि वैराट देश सामान्यतया आधुनिक बेराट नगर के रूप में माना जाता है, जो राजस्थान में जयपुर के उत्तर-पूर्व में बयालिस मील की दूरी पर स्थित है।[3] उन अनेक स्थानों में से जिनके बारे में यह कहा जाता है कि वहां पर सीता और राम ने स्नान किया था एक स्थान नीमसार (नैमिषारण्य) है। सीता ने इस कारण स्नान किया था कि रावण द्वारा अपहरण किये जाने के कारण अपने ऊपर लगे दोष को मिटा दें और राम ने इस हेतु स्नान किया था कि उन्होंने रावण का वध किया था। मनवां (तहसील सिधौली में) स्थित किले के बारे में बताया गया है कि उसे अयोध्या के राजा मान्धाता द्वारा बनवाया गया था और मणिपुर के बारे में भी कहा जाता है कि वह अर्जुन के पुत्र महाभारत काल राजा बभ्रुवाहन की राजधानी थी। किन्तु महाभारत में वर्णित मणिपुर समुद्र के किनारे कलिंग[4] में स्थित था। नीमसार के दूसरी ओर एक स्थान जिसे ओड़ाझार, ओड़ाडीह अथवा बेन नगर कहा जाता है, पौराणिक राजा बेन या वेन से संबद्ध है, जिसकी कहानियां पंजाब से लेकर बंगाल तक प्रचलित हैं।

ऐतिहासिक काल में एक बहुत प्राचीन किंवदन्ती के अनुसार तहसील बिसवां में सिओटा के निकट आल्हा द्वारा जो परमार्दिदेव या परमाल चन्देल के दरबार का प्रसिद्ध बनाफर योद्धा था, एक किला बनवाया गया था। एक और स्थान, जिसका संस्थापक इस आल्हा को बताया जाता है, दहावर नदी पर स्थित ऊंच गांव था (जिसे बाद में नवगढ़ कहा जाने लगा था), किन्तु वह नदी में बह गया। आल्हा के सेना नायकों में से एक रनुआ पासी था, जो पुरवा तम्बोलियान (जिसे अब तम्बौर[5] के रूप में जाना जाता है) का प्रसिद्ध संस्थापक था।

पुराणों के अनुसार नैमिष का अरण्य (वन) कृत युग में सबसे पवित्र क्षेत्र था जो अयोध्या[6] के राज्य में गोमती नदी के किनारे पर स्थित था। वैदिकोत्तर युग में भी नैमिष एक विख्यात स्थान रहा है जिसे इस जिले के वर्तमान नगर नैमिषारण्य (जिसे नीमसार भी कहा जाता है)[7] के रूप में जाना जाता है। नैमिष वन के ऋषियों तथा उनके यज्ञ संबंधी समारोहों का उल्लेख तत्कालीन साहित्य में प्रायः प्राप्त होता है।[8]

पौराणिक परम्परा के अनुसार कहा जाता है कि प्रसिद्ध चन्द्रवंश के पूर्व-पुरुष पुरूरवा ऐल जो सूर्यवंशी इक्ष्वाकु के समकालीन थे, अधिकार पाकर मदान्ध हो गये थे और उन्होंने ब्राह्मणों से लड़ाई घोषित कर दी, उनको अथवा उनके रत्नाभूषण लूट लिये तथा यज्ञ करते हुये ऋषियों की नैमिष की स्वर्णमयी यज्ञ-भूमि के प्रति लोलुपता दिखाई। उन ऋषियों ने विद्रोह करके उन्हें मार डाला और उसके ज्येष्ठ पुत्र आयु को राजसिंहासन पर अभिषिक्त कर दिया[9], किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि सूर्यवंशी राम के युग में यह प्रदेश अयोध्या के राज्य का एक भाग था। रामायण के अनुसार

---

[1]अबुलफजल: आईने अकबरी, जैरेट का अनुवाद, खण्ड 2, (द्वितीय संस्करण), कलकत्ता, 1949, पृष्ठ 188।
[2]एच0 आर0 नेविल : सीतापुर : ए गजेटियर (1905), पृष्ठ 214।
[3]एस0 बी0 चौधरी : ईथनिक सेटिलमेंट्स इन ऐन्शेन्ट इंडिया, पृ0 31 ।
[4]महाभारत (गीता प्रेस, गोरखपुर, वि0 सं0 2013) भाग 1, पृ0 266, एन0 एल0 डे : (दि जॉग-रफिकल डिक्शनरी आफ ऐन्शेन्ट ऐन्ड मेडीवल इंडिया), (कलकत्ता, 1899), पृष्ठ 54।
[5]एच0 आर0 नेविल : सीतापुर ए गजेटियर (1905), पृ0 119।
[6]एफ0 ई0 पार्जिटर : ऐन्शेन्ट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशन, (लन्दन, 1922), पृष्ठ 313।
[7]बी0 सी0 ला : हिस्टोरिकल जागरफी ऑफ ऐन्शेन्ट इंडिया, पृष्ठ 113।
[8]आर0 के0 मुकर्जी : ऐन्शेन्ट इंडियन एजूकेशन (1947), पृष्ठ 147।
[9]मजूमदार और पुसलकर (सं0):-दि हिस्ट्री ऐण्ड कल्चर ऑफ दि इंडियन पीपुल, खण्ड 1, पृष्ठ 273 ; एफ0 ई0 पार्जिटर : ऐन्शेन्ट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडीशन (लन्दन, 1922) पृष्ठ 305;